

I wish to assure the Hon'ble Members of the House that we will spare no effort in supporting the State Governments to meet the situation effectively

### SHORT DURATION DISCUSSION

**Serious situation in Assam in view of recent ethnic clashes and massacre of refugees in Barpeta district—**  
Contd.

श्री कों. एम. खान (आन्ध्र प्रदेश) :  
डिप्टी चेयरमैन साहब ।

उपसभाध्यक्ष (श्री लतीफ अग्रवाल) :  
जरा समय का ध्यान रखिए, इतना निवेदन है । मैं किसी को कटेल नहीं करना चाहता । वैसे मिश्र जी का तीन मिनट का समय था, मैंने 17 मिनट दिया । किसी को डिबेट में कटेल करना अच्छा नहीं समझता हूँ । आप समय का ध्यान रखिए, केवल इतना निवेदन किया है मैंने । यह सेशन स्पीच है आपकी ।

श्री कों. एम. खान : यह कोई उन दो देशों के और दो धर्मों के बीच में आतंकवाद का मसला नहीं है । मैं इस सदन में यह दरखास्त करूँगा कि इस सारे मामले पर एक इंसानी सले की हैसियत से गौर किया जाए । बरपेटा में निहत्थे इंसानों पर, औरतों और बच्चों पर जिस बहिमाना तरीके से हमला हुआ, उनका कत्लेआम हुआ यह हमारी सेक्युलर डेमोक्रेसी पर एक काला घब्बा है । ... (व्यवधान)

श्री कैलाश नारायण सारंग (मध्य प्रदेश) :  
भोगी जी का भी नाम लिख लेना । ....  
(व्यवधान)

श्री कों. एम. खान : वज्रहात जो कुछ भी रही हों, लेकिन किसी ऐसे इंसान पर जिसका कोई जुल्म न हो, जिसका कोई कसूर न हो उन पर इस तरह अगर गोशियाँ चलाई जाएँ, इस तरह अगर उनको हलाक किया जाए तो यह एक ऐसा वाक्या है जिसकी जितनी भी भयङ्करता की जाए, कम है । चेयरमैन साहब, मैं यह कहना चाहता हूँ कि अखबारी इतला के मुताबिक 19 और 20 जुलाई के दरम्यान इस इलाके में बौडो सिक्किमिटी फोर्स के लोगों ने हमला करके वहाँ 250 गांव जलाकर राख कर दिए

और 16 व्यक्तियों को इस हमले में हलाक किया । इनका कसूर क्या था ? इनकी गलती क्या थी ? अगर इनकी गलती यह थी कि यह नान-बौडो थे, या इनका किसी खास तबके से या फिरके से ताल्लुक था, तो मैं समझता हूँ इससे शर्मनाक बात और कोई नहीं हो सकती । इनका किसी खास तबके से ताल्लुक था और मैं समझता हूँ कि इससे ज्यादा शर्मनाक बात नहीं हो सकती । तो इन वाक्यात के सिलसिले में यह बात भी सामने आई है कि जब ये वाक्यात हुए और इनको रिलीफ कैम्प में भेजा गया तो फिर इस रिलीफ कैम्प को, बरपेटा में जो रिलीफ कैम्प है, यह एक अलग इलाके में है और जो भूतान के बार्डर के करीब है और जो चारों तरफ जंगल से घिरा हुआ है । ऐसे इलाके में रिलीफ कैम्प को रखने से यह बात भी सामने आई कि इस रिलीफ कैम्प की सिक्किमिटी के लिए जितनी फोर्स की जरूरत थी, उतनी फोर्स वहाँ नहीं थी जिसके कारण एक ऐसे वक्त में जब कि सारे इलाके में कर्फ्यू लगा हुआ था, इन दहशतगदों ने इनके कैम्प पर हमला किया और सोते हुए इंसानों का कत्लेआम किया । मुझे यकीन है कि हमारा यह हाउस ऐसे वाक्यात की भरपूर मजबूत करेगा । इसमें किसी पोलिटिकल रिजर्वेशन से काम नहीं लिया जाएगा । क्योंकि यह एक ऐसा वाक्या है जिसको हम एक कौमी सानया कह सकते हैं । इसके बाद मैं आपसे यह स्वादिष्ट करूँगा कि हम अपनी लड़ाई उस रहनियत के खिलाफ, उस आइडियालाजी के खिलाफ शुरू करें जो नफरत की आइडियालाजी है, जो इंसानों को एक-दूसरे से तकसीम करने की आइडियालाजी है । जरूरत इस बात की है कि हम इस आइडियालाजी के खिलाफ लड़ें । अगर लड़ाई बौडोज और नान-बौडोज में है तो इसका हल तलाश किया जा सकता है । जैसा कि मुझसे पहले कहा गया ऐसा कोई मसला नहीं है जिसका हल नहीं है लेकिन बुनियादी बात यह है कि नफरत का जो प्रचार किया जा रहा है, नफरत की जो आग इस मुल्क में लगाई जा रही है धर्म के नाम पर, मजहब के नाम पर, भाषा के नाम पर, इलाके के नाम पर यह जो नफरत का

बस खेला जा रहा है, इसको बंद करने की जरूरत है यह मैं आपसे कहना चाहता हूँ। तो इसके साथ-साथ मैं और चन्द बातें हैं, मैं उन बातों का जिक्र नहीं करूंगा यहां जिनका मुझसे पहले मेरे पूर्व वक्ता ने जिक्र किया लेकिन चन्द बातों का मैं जरूर जिक्र करना चाहता हूँ। अभी कहा गया है और मुझसे पहले आई. एस. आई. का जिक्र किया गया। मैं साफ़ तौर पर यह कहना चाहता हूँ कि सारा मुल्क आई. एस. आई. की सरगमियों से परेशान है और इसमें कोई दो राय नहीं है। आई. एस. आई. के जो लोग हमारे मुल्क के अंदर आ कर हमारे मुल्क को तकसीम करने की, हमारे मुल्क को टुकड़े-टुकड़े करने की साजिशें कर रहे हैं, उनके खिलाफ सरकार को सख्त से सख्त कार्यवाही करनी चाहिए। मैं हैदराबाद शहर से आता हूँ। मेरा ताल्लुक हैदराबाद शहर से है। हम देखते हैं कि हमारे शहर में कुछ लोग ऐसी बातें करते हैं कि आई. एस. आई. का ताल्लुक किसी एक खास फिरके से जोड़ दिया जाता है, किसी खास मजहब से जोड़ दिया जाता है और कहा जाता है कि हैदराबाद की मस्जिदों के अंदर आई. एस. आई. की सरगमियां जारी हैं। कह दिया जाता है कि जो अकलियतों के मंदिरों हैं उनके अंदर आई. एस. आई. की ट्रेनिंग हो रही है यह गलत है। जो लोग इस तरह की बातें करते हैं, तो यह मसला सिर्फ़ बोबो और असम का नहीं है, यह मुसलमानों के देश का है, सारे मुल्क का है। जो लोग इस तरह की बातें करते हैं, उनका मतलब यह है कि इस मुल्क में नफ़रत की आग फैला कर अपना मतलब पूरा किया जाए। इसलिए मैं आपसे दख्खास्त करता हूँ और आपकी तवस्सुत से यह कहना चाहता हूँ कि हम सब इस वाक्य की भरपूर मजबूती करें और इसके साथ-साथ बरपेटा में जो लोग अनाथ हुए हैं, उनके जो वारिस हैं, उनको मुआवजा दिया जाए। मैं यह कहना चाहता हूँ कि हर महलूक को दो लाख रुपए अभी मिलें। अभी जैसा कि ओबेदुल्ला खान जी ने कहा कि हर महलूक को दो लाख रुपए का मुआवजा दिया जाए और इसके साथ-साथ जो बरपेटा का कैम्प है

जिसके ताल्लुक ये रिपोर्ट पड़ी गई है कि यह गैर-महलूक इलाके में है, इसको फौरन वहां से मुत्ताकिल किया जाए क्योंकि अगर यह कैम्प वहां रहता है तो वहां बहुत परेशानियों में जो लोग रहते हैं उनकी परेशानियों में और इजाफा होगा। उसके साथ-साथ वह सारे लोग जो इन 20 कैम्पों में पनाह लिए हुए हैं, उनकी जरूरियात का इंतजाम किया जाए क्योंकि यह सब गरीब तबके के लोग हैं। इनमें से बहुतों का ताल्लुक अकलियतों की फिरकत से है और ये लोग ऐसे नहीं हैं कि दोबारा सिर उठा सकें, दोबारा अपना जला हुआ घर बना सकें इसलिए इनको बाद-आबाद करने की जरूरत है। इसके साथ साथ मैं आपसे यह भी दख्खास्त करना चाहता हूँ कि हमें ऐसा यत्न करना चाहिए, ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि सब की तलाश की जा सके और सच्चाई की तलाश इस तरह से करे कि एक आल पार्टी डेलिगेशन वहां पर जाकर देखे कि सच्चाई क्या है, और किस तरह से हिन्दुस्तान का यह सबसे बड़ा इंदारा इस मसले का हल किस प्रकार करा सकता है, यह देखे तो मैं समझता हूँ कि कोई गलत बात नहीं होगी।

मैं इन अफ़ाज के साथ एक बात और कहना चाहता हूँ कि सरकार ने जो मिलिटेंट्स के खिलाफ़ कार्रवाई शुरू की है, बोबो सैक्युरिटी फ़ोर्स के जो एलिमेंट्स हैं जो इस घटना के लिए जिम्मेदार हैं, उनके खिलाफ़ कार्रवाई शुरू की जाए लेकिन एक बात मैं साफ़ कह देना चाहता हूँ कि उन सबके खिलाफ़ कार्रवाई करने के जोश में कहीं ऐसा न हो कि हम उन उग्रवाधियों को पकड़ने के जोश में ऐसे लोगों के खिलाफ़ कार्रवाई न कर बैठें जो कि बेकसर हों। हम नहीं चाहते कि हमारे मुल्क में एक और नया पंजाब पैदा हो, हम नहीं चाहते कि हमारे यहां एक और काश्मीर बने या ऐसे इलाके पैदा हों कि जहां लोग एक दूसरे के खिलाफ़ हथियार उठाएं और एक दूसरे का खून बहाएं। इसलिए इस बात की कोशिश होनी चाहिए कि जो बोबोज में नाराजगी पैदा हुई है उसको खत्म करना चाहिए। मुझे यकीन है कि हमारे काबिल होम

مینسٹر راجیش پایلٹ ساہب جینھونے  
وہاں کا دورہ کر کے ایک ایسا ایڈماتس-  
فیکٹر کیا جس سے محسوس ہوتا  
ہے کہ جو لوگ وہاں کیمپوں میں رہ رہے  
ہیں ان کی حفاظت کے مسئلے پر سرکار کی  
توجہ ہے، ان کو اپنے گروہوں میں لانے کے  
لیے جو کوشش کی جا رہی ہے، اس کی  
میں تारीف کرتا ہوں اور اطمینان کرتا  
ہوں کہ جو لوگ کیمپوں میں ہیں ان کو سرکار  
پوری سہولت دے گی۔

شکریہ ادا کیا۔

شری کے۔ ایم۔ خان۔ ”آندھرا پردیش“ :

ڈپٹی چیئرمین صاحب۔

آپ سب اچھا ویکس ”شری ستیش اگر وال“ :

ذرا سے کا دھیان رکھیے اتنا تو دین ہے۔

میں کسی کو کمر ٹیل نہیں کرنا چاہتا۔ ویسے

شری کا تین منٹ کا سے تھا میں نے

۱۷ منٹ دیا۔ میں کسی کو ڈیڑھ منٹ میں کمر ٹیل

کرنا اچھا نہیں سمجھتا ہوں۔ آپ کے ساتھ

رکھیے۔ کیوں اتنا دین کر رہے ہیں۔

یہ میڈن ایسج ہے۔ آپ کا۔

شری کے۔ ایم۔ خان : یہ کوئی ان دو دیشوں

کے اور دو دھڑوں کے بیچ میں آتکوا کا

مسئلہ نہیں ہے۔ میں اس مسئلہ سے یہ

درخواست کروں گا کہ اس سارے معاملے

پر ایک انسانی مسئلہ کی حیثیت سے غور کیا

جائے۔ ”بار پٹا“ میں بہتے انسانوں پر غور

اور بچوں پر غور اس ہیجان طریقہ سے حملہ ہوا

ان کا حق عام ہوتا ہے کہ ہماری سیکورٹی کو کوئی

پر ایک کالا دھبہ ہے۔۔۔ وہ اہمیت۔۔۔

شری کے لاش مارا ان سارا گناہ : جو گناہی

نام لکھ لینا۔۔۔ ”مدخلت“۔۔۔

شری کے۔ ایم۔ خان : اس کی وجوہات جو

کچھ بھی رہی ہوں۔ لیکن کسی ایسے انسان پر

جس کا کوئی جرم نہ ہو۔ جس کا کوئی قصور نہ

ہو ان پر اس طرح اگر گولیاں چلائی جائیں۔

اس طرح اگر ان کو ہلاک کیا جائے تو یہ ایک

ایسا واقعہ ہے جس کی جتنی بھی مذمت کی جائے

کم ہے۔ چیئرمین صاحب۔ میں یہ کہنا چاہتا

ہوں کہ اخباری تبصرہ کے مطابق ۱۹ اور ۲۰

جولائی کے درمیان میں اس علاقہ میں بوڑھ

سیکیورٹی فورس کے لوگوں نے حملہ کر کے

وہاں ۲۵۰ گاؤں جلا کر رکھ کر دیے اور ۱۲ افراد

کو اس حملے میں ہلاک کیا گیا۔ ان کا قصور کیا

تھا۔ ان کی غلطی کیا تھی۔ اگر ان غلطی سے تھی

کہ یہ نان بوڑھ تھے ان کا کسی خاص طبقے سے

یا فرق سے تعلق تھا تو میں سمجھتا ہوں کہ اور

کوئی شرمناک بات نہیں ہوتی۔ ان کا کسی

خاص طبقے سے تعلق تھا اور میں سمجھتا ہوں

کہ اس سے زیادہ شرمناک بات نہیں ہو سکتی

تو ان حالاتوں کے سلسلے میں یہ بات بھی

سامنے آئی کہ جب یہ واقعات ہوئے اور

ان کو ریلیف کیمپ میں بھیجا گیا تو پھر

سہریلیف کیمپ کو بار پٹا میں بھیجا گیا۔

کیمپ ہے یہ ایک انگل علاقہ میں رکھا گیا جو بھوٹان کے بارڈر کے قریب ہے اور چاروں طرف سے جنگل سے گھرا ہوا ہے۔ ایسے علاقہ میں ریلیف کیمپ کو رکھنے سے یہ بات بھی سامنے آئی کہ اس ریلیف کیمپ کی سیکوریٹی کے لیے جتنی فوریس کی ضرورت تھی اتنی فوریس وہاں نہیں تھی جس کے سہارا ایک ایسے وقت میں جبکہ سارے علاقہ میں کرفیو لگا ہوا تھا ان دشمن گروہوں نے ان کے کیمپ پر حملہ کیا اور سوتے ہوئے افسانوں کا تعلق عام کیا۔ مجھے یقین ہے کہ ہمارا یہ ہاؤس ایسے واقعات کی بھرپور منبت کرے گا۔ اس میں کسی پوٹینشل رد و مدین سے کام نہیں چلے گا۔ کیونکہ یہ ایسا واقعہ ہے جس کو ہم ایک قومی سانحہ کہہ سکتے ہیں۔ اس کے بعد میں آپ سے یہ خواہش ظاہر کروں گا کہ ہم اپنی لڑائی اس ذہنیت کے خلاف اس آئینڈیا لوجی کے خلاف شروع کریں جو نفرت کی آئینڈیا لوجی ہے جو چھوٹے چھوٹے انسانوں کو ایک دوسرے سے تقسیم کرنے کی آئینڈیا لوجی ہے۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ ہم اس آئینڈیا لوجی کے خلاف لڑیں۔ اگر لڑائی بوڈوز اور نان بوڈوز میں ہے تو اس کا حل تلاش کیا جاسکتا ہے جیسا کہ مجھ سے پہلے کہا گیا ایسا کوئی مسئلہ نہیں ہے جس کا حل ہمیں ہے لیکن بنیادی بات یہ ہے کہ نفرت کا جو

پرچار کیا جا رہا ہے۔ نفرت ہی جو آگ اس ملک میں لگائی جا رہی ہے دھرم کے نام پر۔ مذہب کے نام پر۔ بھاشا کے نام پر علاقہ کے نام پر یہ جو نفرت کا کھیل کھیلا جا رہا ہے اس کو بند کرنے کی ضرورت ہے۔ یہ میں کہتا ہوں کہنا چاہتا ہوں۔ تو اس کے ساتھ ساتھ اور چند باتیں ہیں ان باتوں کا ذکر نہیں کروں گا یہاں جن کا مجھے پہلے میرے پورو دیکھانے ذکر کیا لیکن چند باتوں کا میں ضرور ذکر کرنا چاہتا ہوں۔ ابھی کہا گیا اور مجھے پہلے آئی۔ ایس۔ آئی کا ذکر آیا۔ میں صاف طور پر یہ کہنا چاہتا ہوں کہ سارا ملک آئی۔ ایس۔ آئی کی سرگرمیوں سے پریشان ہے اور اس میں کوئی دورائے نہیں ہے۔ آئی۔ ایس۔ آئی کے جو لوگ ہمارے ملک کے اندر آکر ہمارے ملک کو تقسیم کرنے کی۔ ہمارے ملک کو ٹکڑے ٹکڑے کرنے کی سازشیں کر رہے ہیں۔ ان کے خلاف سرکار کو سخت سے سخت کارروائی کرنی چاہیے۔ لیکن ہم یہ دیکھتے ہیں۔ میں حیدر آباد شہر سے آتا ہوں۔ میرا تعلق حیدر آباد شہر سے ہے۔ ہم دیکھتے ہیں کہ ہمارے شہر میں کچھ لوگ ایسی باتیں کرتے ہیں کہ آئی۔ ایس۔ آئی کا تعلق کسی ایک مباحث فریق سے جوڑ دیا جاتا ہے کسی خاص

مذہب سے جوڑ دیا جاتا ہے اور کہا جاتا ہے کہ حیدر آباد کی مسجدوں کے اندر آئی ایس۔ آئی کی سرگرمیاں جاری ہیں۔ کہہ دیا جاتا ہے کہ جو اقلیتوں کے مدد سے ہیں ان کے اندر آئی۔ ایس۔ آئی کی ٹریفنگ ہو رہی ہے جو لوگ اس طرح کی بات کرتے ہیں تو یہ مستند صرف بوڈو اور آسام کا نہیں ہے۔ یہ مسئلہ سارا دیش کا ہے۔ سارے ملک کا ہے۔ جو لوگ اس طرح کی باتیں کرتے ہیں ان کا مقصد یہ ہے کہ اس ملک میں نفرت کی آگ پھیلا کر اپنا مقصد پورا کیا جائے اس لیے میں آپ سے درخواست کرتا ہوں اور آپ کی توجہ سے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ ہم سب اس واقعہ کی بھرپور مذمت کریں اور اس کے ساتھ ساتھ بارپیشا میں جو لوگ اناقتہ ہوئے ہیں ان کے جو وارثین ہیں انکو معاونہ دیا جائے۔ میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ ہر مہلوک کو دلاکھ ابھی ملیں۔ ابھی جیسا عبید اللہ خاں جی نے کہا کہ ہر مہلوک کو دو دلاکھ روپے کا معائنہ دیا جائے اور اس کے ساتھ ساتھ جو بارپیشا کا کیمپ ہے جس کے تعلق سے یہ روپے پڑھیں گے ہیں کہ یہ غیر محفوظ علاقہ میں ہے اس کو فوراً وہاں سے منتقل کیا جائے کیوں کہ اگر یہ کیمپ وہاں رہتا ہے تو وہاں بہت پریشانیوں میں جو لوگ رہتے ہیں ان کی پریشانیوں میں

اور اضافہ ہو جائے گا اس کے ساتھ ساتھ وہ سارے لوگ جو ان ۲۰ کیمپوں میں پناہ لئے ہوئے ہیں ان کی ضروریات کا انتظام کیا جائے۔ کیوں کہ یہ سب لوگ غریب طبقہ کے لوگ ہیں ان میں سے بہتوں کا تعلق اقلیتی فرقے سے ہے اور یہ لوگ ایسے نہیں ہیں کہ دوبارہ سہارا سکیں۔ دوبارہ اپنا جلا ہوا گھر بنا سکیں۔ اس لیے ان کو باز آباد کرنے کی ضرورت ہے۔ اس کے ساتھ ہی ساتھ میں آپ سے یہ بھی درخواست کرنا چاہتا ہوں کہ ہمیں ایسا جتن کرنا چاہیے ایسی کوشش کرنی چاہئے کہ سچ کی تلاش کی تلاش کی جاسکے اور سچائی کی تلاش اس طرح سے کریں کہ آگ پارٹی قبیلہ گیشن وہاں پر جا کر دیکھیں کہ سچائی کیسے کس طرح سے ہندوستان کا سب سے بڑا ادارہ اس مسئلے کا حل کس پر کر رہا ہے۔ یہ دیکھئے تو میں سمجھتا ہوں کہ کوئی غلط بات نہیں ہوگی۔ میں ان الفاظ کے ساتھ ایک بات اور کہنا چاہتا ہوں کہ سرکار نے جو ملینٹنس کے خلاف کارروائی شروع کی ہے پوڈو میکورٹی فورس کے جو ایلیمینٹس ہیں جو اس گھٹن کے لئے ذمہ دار ہیں ان کے خلاف کارروائی شروع کی جائے لیکن ایک بات میں صاف کہہ دینا چاہتا ہوں کہ ان سب کے خلاف کارروائی کرنے کے جوش میں کہیں ایسا نہ ہو کہ ہم ان اگر دایوں کو پکڑنے کے جوش میں ایسے لوگوں

میں نے خلاف کارروائی نہ کرتے ہیں جو کہ بے قصور ہوں۔ ہم نہیں چاہتے کہ ہمارے ملک میں ایک اور نیا پنجاب پیدا ہو۔ ہم نہیں چاہتے کہ ہمارے یہاں ایکساؤتھیمیر بنے یا ایسے علاقے پیدا ہوں کہ جہاں لوگ ایک دوسرے کے خلاف ہتھیار اٹھائیں اور ایک دوسرے کو خون بہائیں۔ اس لئے اس بات کی کوشش ہونی چاہیے کہ جو بوڈوز میا ناراضی پر رہا ہوئی ہے اس کو ختم کرنا چاہیے۔ مجھے یقین ہے کہ ہمارے قابل ہوم منسٹر راجیش پائلٹ صاحب جنہوں نے وہاں کا دورہ کر کے ایک ایسا اچھا سفیٹر کر چکا ہے کہ لوگ جو وہاں کیپیوں میں رہ رہے ہیں ان کی حفاظت کے مسئلہ پر سرکار کی نظر ہے اُن کو اپنے گھروں میں لانے کے لئے جو کوشش کی گئی ہے اس کی میں تعریف کرتا ہوں کہ اور امید کرتا ہوں کہ سرکار پوری شرکت سے لگے گی۔ شکریہ۔

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SATISH AGARWAL): Shri S. Viduthalaj Virumbi. Absent. Shri G. Swaminathan. Absent. Shri Satya Prakash Malaviya. Absent. Shri V. Narayanasamy. Absent. Shri Suresh Pachouri. Absent. Shri Bhadreswar Gohain. Absent. Now I call upon the Minister to reply. Mr. Rajesh Pilot.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI RAJESH PILOT): Mr. Vice-Chairman, Sir, I share the anguish of the House with a very heavy heart.

I mentioned this in the other House also. I think any Member who is in my position will have the same feeling and it is very difficult to express one's feelings and to reply to a debate of this nature because such a tragedy has taken place there. It is a fact that we have been monitoring the situation in the North-East, especially in Assam. As my colleague, Janeshwarji, was saying here we in the Government have been trying to go as closer to their culture, as closer to their feelings in many ways, to understand them to bring them as closer to the mainstream as possible.

Sir I still remember what the late Pandit Jawaharlal Nehru had said when he was speaking at Dimapur in one of the public meetings. Some of the Congress members approached him and said, "We can build a party here." It was Nagaland People's Party (NPP) initially. He said, "Building Congress Party is not important. Building goodwill among the people here and bringing them into the mainstream are more important." That was the message he gave to the party people there.

I assure you, Sir, that we have been following that line. If you recollect, there was an agitation in Assam. I was a Member of Parliament at that time and the late Rajiv Gandhi was the Prime Minister. We had held a discussion with the AGP and the AASU leaders and we talked to them. We said "Let us sit together and see what could be best for Assam and what could be best for our brothers and sisters in these far-flung areas. Let us chalk it out and see how we can work together." We had an accord. We had a duly elected Government of the Congress Party. And the Chief Minister resigned. We went in for elections knowing very well that the Congress

would lose. We knew that we would lose our Government. But we wanted peace in Assam. Similarly, in Mizoram there was an elected Government of the Congress. The Chief Minister resigned. We went in for an Accord with the late Laldengajai and tried to bring peace there. With this kind of an approach we have been working. It is a fact that when we thought about this Accord, the feeling was that the Bodo problem was there for the last 10 or 12 years. I still remember that this problem was being discussed from the mid-1980s onwards by the late Rajiv Gandhi at that time. Then the subsequent Governments of Shri V. P. Singh and Shri Chandra Shekhar were having continuous dialogues with them as to how to bring them closer. I do agree with the feeling of the hon. Members that no accord is perfect. The accord is an instrument, is a channel to reach nearer to the solution. I am not saying that the whole solution lies with the Accord. It is the spirit behind the Accord which is more important. With that spirit in mind, I and the officials of the State Government of Assam discussed it for nearly one week. After that we signed this Accord with that spirit so that they could retain their culture, they could develop themselves and they could develop that area. Let me assure the House that the Accord was well received by the common man I attended the rally after the Accord in 1993. I have been in politics for the last 15 years. We have arranged transport and other resources for big public meetings. The Bodo people and the non-Bodo people were there. Nearly 10 lakh people were there. I could not believe it. All of them ladies, gents and children were coming there with great hopes. A lot of people surrendered that day. We started it in that spirit. Here I agree with my colleagues who have pointed out that that they started with good speed. We held discussions with them about the boundary.

There was some difference of opinion. The Chief Minister, after discussing it with all the political parties, which I was given to understand, decided about 2570 villages. They were asking for 3085 villages. On my own, I called the Bodo people and talked to them. I said, "In case you don't gain the confidence of the non-Bodo people, you would not succeed in this effort of the aim with which this Bodo Council has been formed." That is why five of six non-Bodos were nominated. We kept the nominating authority with the State Government and the Governor so that the non-Bodos could be part and parcel of the Council. That was the intention behind it. Sir; a lot of people from Bihar, Rajasthan, West Bengal and northern parts of the country have come and settled in that area. They are there for hundred of years. They live like brothers and sisters. They speak the same language. They live in the same style. They celebrate most of the festivals together. That sort of culture has developed. We want to retain that with the same strength and the same fibre of common approach to all of them. There was some improvement. We had an open mind for that. They asked for some villages. Some 20 days back the hon. Chief Minister and the whole Council had come. I talked to the Environment Minister. I said "There is a total tribal belt. With your forest restriction, can we still give them some areas so that they have the satisfaction that they have the Bodo land and the Bodo Council?" It was in the process. Unfortunately, this incident took place. Sir, between 19th and 21st the Bodos attacked that area. The camp was set up at Basbari which is 30 to 35 kilometres away from the Bhutan border. I received the information on the 24th morning. On that day, I was going to Kashmir. But the Prime Minister said, "No, this incident requires your immediate attention." So I flew to Guwahati with my colleagues, Shri

[Shri Rajesh Pilot]

Tarun Gogoi and Shri P. M. Sayeed and some Members of Parliament. We reached the spot and talked to the people. We talked to the State Government. I have accepted in the other House that there was no co-ordination among the functionaries of the State Administration and the intelligence agencies. There was a shortage of police force in that camp. I have also accepted it. I told it to the Chief Minister. I said, "Knowing that so many people were there, your force should have been adequate on the camp; knowing fully well that there could be an attack on the Bodos in that sector, knowing that the attack could be intensified any moment, you should have taken precautions." But I personally feel that they must have thought that so many people were there in the camp and, so, there was no question of a further attack on them. Now, according to the information which has been given by the hon. Chief Minister, some of these people intruded from the Bhutan side and attacked these camps; 35 people died and 71 people were injured. The hon. Chief Minister and his colleagues were there in that area. When I asked the D.G., "Did you have the information that this attack could be intensified by them?", he had no answer. Then, I asked the Intelligence Bureau people, "Did you have the information? Did you share the information with the Administration?" I must accept that there was a slackness on their part. None of them could answer my question. The hon. Chief Minister and my Minister colleagues were sitting there. Immediately I pointed out that since the last six months, I have been trying to improve the system of sharing information with the Administration. Any party can run a State Government; any party can be in power. But it is the Government which has to protect the nation from such activities.

We decided that on every Monday, the I.B. officers must brief the State Administration about their information. They should share it with them. There is no point in the I.B. sending their information to Delhi and then the same information being sent from Delhi to Guwahati through a different channel. We have decided that once in a week the District Administration must be briefed; once in 15 days at the level of the Commissioner, the Chief Secretary and the D.G., the senior most I. B. officers must share the available information. I am not saying that all the agencies are so perfect that they can predict whatever is going to happen. But whatever information they have, whatever apprehensions they have, they must share them with the State Administration so that the State Administration so that the State Administration and efficiently control the situation and it can be precautionary measures.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SATISH AGARWAL): I understand that there is a computerised system in all the districts.

SHRI RAJESH PILOT: I am coming to that. We started it. We decided that we should have control rooms in all the districts. Twenty-four are functioning now. My problem is, though some of the State Governments do confirm to it in practice, they do not move with speed. Realising the importance, because we have seen in Bihar and other States where the Intelligence Agency would never inform a District Collector; some precautionary measures were taken. This necessity was felt more so in the North-East, because



of the conditions prevailing there. We felt that till such time that all the seven States did not share the information with one another, they would not be very well-equipped to take preventive measures. To enable this, a scheme has been started at Shillong whereby Assam, Arunachal Pradesh, Meghalaya, Tripura, Nagaland, Sikkim and Mizoram can get the information everyday from Shillong. There is also a computerised feedback to each State. There are hotlines available to the Chief Ministers and the D.G.s from the Shillong Control Room so that any happenings in Mizoram can be made known to the Assam Chief Minister; likewise any happenings in Assam can be made known to the Arunachal Pradesh Chief Minister. Supposing an insurgent group is moving from Mizoram to Assam, the Assam Chief Minister should get the information earlier so that he can take precautionary measures. This system has just started. It has to pick up. It has not been stabilised to such a rate that it is totally in control all over. We selected Shillong because communication was much better from Shillong than from other places. It is working. A D.G.-rank officer has been notified to co-ordinate with all the seven States and share the I.B. information and other things. Now, when this particular incident took place, after discussing with the State Government officials, I went to the camp with my colleagues and the hon. Chief Minister was there. It is a fact that the camp people did tell us that the police force was very, very inadequate. They did tell us that those people fired from such and such area but there was no police force available to go and counter that. The hon. Chief Minister assured me that he would take action against those people who did not act on such information and who were responsible for not having adequate force available there. He asked for the deployment of the army. Imme-

diately, I talked to the hon. Prime Minister, who also holds the Defence portfolio, and Shri Mallikarjun. And the army was deployed immediately at whatever points he asked for. Today morning we got a communication from him. He wanted the army to be deployed in seven districts more. That has been taken up with the Defence Ministry. We are trying to give as much force as is available. Basically, I have been insisting on the State Government that they should equip their own force. For Assam we gave special money for modernisation of their police force. We gave them special things so that they can train their people accordingly. The para-military forces should only be a fire-fighting force. When there is a problem, they should go there, help them and come back. But this attitude of the State Governments to get the para-military forces and station them there or two or three years is not a very healthy sign. That is why we are bringing in accountability; whenever you need the para military forces, you give us a mission, you give us a job; the para-military forces will do it and come back.

Now, Sir, for the North-East we have opened a Zonal Centre at Guwahati because since the force is going from the North and the North-East, it takes a lot of time, you have to airlift it and it is also very costly and time-consuming. We have made Guwahati as the Zonal Centre so that all the reserve forces, all the para-military forces are available at Guwahati and they can be diverted any time to the States. Now, if they wanted 15 Companies of the Central Reserve Police Force, I have only five available there as reserve. I immediately ordered that those five must move and that we should supplement the remaining ten from Bihar or West Bengal.

I would, at the moment, share this information with the House that

[Shri Rajesh Pilot]

We are equally concerned. I fully share what Mr. Dutta and the other colleagues have said that the North-East is a sensitive area and that insurgency has been a very old problem in that area. But, Sir, there have been improvements. Unfortunately, one incident takes us six months back in our efforts. There has been improvement in the insurgency control. We have been having the same approach in Nagaland and in Mizoram too. As my young friend David Ledger has said, we have an open approach Policy. We want to talk to any organisation which can help us in bringing normalcy. We want the gun culture to go from the country. But, with the same approach, we cannot allow the gun culture to remain there with our softness. We have got to go very hard on insurgency, but with the same approach of an open heart, to have a discussion and bring normalcy. What Mr. David has hinted, Sir, we have said to some organisations that first they must stop their gun culture. You cannot talk to a person who is firing everyday at the citizens and then you tell them that you are ready to talk to them. You have got to tell him, "You shut your gun and tell us that you are ready to come to the mainstream." Then only the Government can consider that discussion because you have to restore the confidence of the people, problems which are faced in those areas are numerous. You all come from the North-East. Sir, economically, we have taken a lot of steps to bring this area into the mainstream. The main problem is that these are far-flung areas. In that House; somebody had mentioned that emotionally they must be attached with us. Sir we have the decisions to connect most of these places with air links. I am also happy that Shri Jaffer Sharifji has introduced the Shatabdi Exp. now between Guwahati and Delhi. Some more rail connection are going to be decided so that

this area gets connected to the mainstream. Now they are so far-flung that they do not feel that they are closer to the mainstream. Similarly, air links have been thought over. When I was the Minister for Communications, we gave priority to all the North-Eastern areas so that they have the best communications available there to contact any part of the country or any part of the world and that they feel that they are in the mainstream. All these efforts have been made.

Sir, we have a separate formula for the economic development of the North-East. A separate Committee has been made for economic development of all the seven States which the Home Minister is heading. Of course, Sir, there are some lacunae in the system. As my colleague has mentioned, there is misuse of the resources. But gradually, we are getting over all this. I have brought in some accountability in the system. I am very sure, Sir, that with our approach of having economic development of that area, fighting the insurgency with a strong hand, having an open approach policy to have discussions with them to bring them into the mainstream, will certainly bear good fruits.

Lastly, Sir, We are monitoring the situation in Bepeta and other places. I can assure the House that although law and order is a State subject, still we give special attention to the North-East and that special care will be taken for those areas. Sir, the Army, the para military forces and the other deployed forces have done a very good job. When I go to the rural areas there, the way they are facing the insurgents, the way they are bringing the people there into the mainstream, the people there say that they are happy just because the Army is there. They say they are happy that the para-military forces are there. They look after them. They mix up with them. They live like families and that is one

thing which has brought them closer to the mainstream in the North-East, Sir, I assure the House that these efforts would continue. It is a tragedy and such incidents should not be repeated. We will certainly lost all our efforts on the side so that normalcy is maintained and such incidents do not take place again in those areas. This assurance I can give

श्री विष्णु कान्त शास्त्री : महोदय, माननीय मंत्री जी ने शमसुल हक के बारे में कुछ नहीं कहा (व्यवधान) श्री शमसुल हक के बारे में आपकी क्या राय है और उन्होंने क्या कार्यवाही की ? .... (व्यवधान)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SATISH AGARWAL): Shri Swell.

SHRI G. G. SWELL: Sir, I put a direct question to the Minister. After the explosion that took place on the police van, was there an attack by a group of men led by a Minister of the State Government on a Bodo village and atrocities were committed on the Bodo people and Bodo women and this attack by the Bodo Security Forces was in retaliation to that action?

SHRI RAJESH PILOT: Sir, I think, all of them have this apprehension that some individual was involved in inciting these incidents, as my senior colleague, Swellji, has said. I will certainly get the details on this particular incident which you have said. Your information is given to me. I will certainly talk with the State Government, verify it and if it is so, I will certainly take action and let that action be known to you.

श्री विष्णु कान्त शास्त्री : महोदय, शमसुल हक की कार्यवाही की कोई सूचना आपके पास नहीं है .... (व्यवधान) आपकी वहां इंटेलेजेंस है, आप कहते हैं कि हर जिले में है, लेकिन शमसुल हक साहब ने क्या किया इसकी कोई सूचना आपके पास नहीं है, कौसी इंटेलेजेंस आपकी चल रही है ?

SHRI RAJESH PILOT: Shastriji, leave aside the intelligence. I had

personally gone there. I had gone to the camp itself. After that I met the representatives of political parties. They have given me some Memoranda on similar lines on which you are saying. I immediately gave them to the Chief Minister saying, "I want your comments, Chief Minister, on it." Before I get the comment on a piece of information which I cannot verify or about which I cannot really say with certainty whether it is wrong or right.

श्री संजय प्रिय गोतम (उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष जी, चर्चा के दौरान कुछ सदस्यों ने कुछ राजनीतियों को और कुछ अधिकारियों को इस कांड के लिए दोषी ठहराया। आपसे यह पूछना चाहता हूं मंत्री जी, आपकी जानकारी में क्या कोई राजनीतिज्ञ और अधिकारी दोषी पाया गया या ठहराया गया ? किसी के ऊपर आपने जिम्मेदारी डाली ? क्या किसी के खिलाफ किमिनल केस रजिस्टर हुआ ? क्या किसी भी राजनीतिज्ञ या अधिकारी की गिरफ्तारी हुई, क्या किसी को नौकरी से सस्पेंड किया गया ? अगर यह नहीं है तो क्षमा करना, आई वाश के अलावा कुछ नहीं है और कुछ न आगे होने वाला है। अब आप बताइये क्या है ?

श्री राजेश पायलट : सर, जैसा मैंने खुद कहा कि मुख्य मंत्री जी मेरे साथ कैप में थे। मैंने मुख्य मंत्री जी से कहा कि अधिकारी कहीं-कहीं जो फल हो गए हैं उनके खिलाफ एक्शन लेकर हमें बताइये। यह 24 तारीख की बात है। जो आपने कहा कि मुझ पर शिकायत आई मैंने मुख्य मंत्री जी से कहा, गोतम जी, यह तो मानोगे 24 तारीख की शाम को लौटकर 27 को मैं आपको बता दू कि स्टेट गवर्नमेंट ने कितना एक्शन ले लिया है। मुझे जो खबर है कि कुछ अधिकारियों के खिलाफ भी कार्यवाही हुई है, कुछ लोग अरेस्ट भी किए गए हैं, लेकिन जब तक यह पूरी इन्फॉर्मेशन सही रूप में नहीं आ जाए, हाउस की आधी इन्फॉर्मेशन देने की बात ठीक नहीं रहेगी आपका कहना तो सही है, लेकिन मेरी भी मजबूरी आप समझिए।

[ श्री राजेश पायलट ]

As a Minister, I must tell the House only information which is totally correct and which has been made available by the State Government.

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: What action has really been taken? (Interruption)... There is no transfer no punishment. You first put them under suspension (Interruptions)

श्री शंकर दयाल सिंह (बिहार) : उपसभाध्यक्ष जी, जब भी इस तरह का कोई गंभीर मामला देश के किसी हिस्से में होता है तो वह पक्ष और विपक्ष का मामला नहीं बल्कि मानवता का होता है और राजनीति से ऊपर उठ कर देश इस पर विचार करता है और सदन में इसकी चर्चा होती है। मैं एक बात जानना चाहता हूँ कि जहाँ प्रांतीय सरकारें हैं वहाँ राज्य सरकार का प्रथम कर्तव्य होता है सुरक्षा की व्यवस्था देना, जान-माल की रक्षा करना। इतना बड़ा कांड जो हुआ नृशंस कांड जिससे पूरा देश हिल गया और एक जगह राहत कैंप पर ऐसा लगा कि जैसे खुदरा जो हिंसा की घटनाएं हो रही हैं उसको एक जगह ला करके खड़ा किया गया। मैं मंत्री महोदय से जानना चाहूंगा कि क्या आप इस बात को स्वीकार करते हैं कि राज्य प्रशासन की ढील के कारण या अक्षमता के कारण ऐसा हुआ है या राज्य प्रशासन से नहीं बन पा रहा है, जो इस तरह के काम हुए? और, जहाँ इस तरह की असफलता होती है, वहाँ उस राज्य सरकार को रहने का कितना हक है? जब आप यहाँ से संचालन कर रहे हैं तो फिर उनकी क्या आवश्यकता है? इसको जरा आप बताइए।

श्री राजेश पायलट : सर, मैंने खुद यह कहा कि अगर कहीं कमी नहीं होती तो यह इन्सीडेंट नहीं होता। मैंने चीफ मिनिस्टर के सामने कहा है, उनके अधिकारी और सारे मंत्री थे, कि यहाँ लैप्स एडमिनिस्ट्रेशन का हुआ है, इंफोरमेशन, शैथन्य नहीं हो पायी है। पुलिस की

कमी क्यों रही है, मैं खड़े खड़े चीफ मिनिस्टर से उस वक्त इतना जवाब नहीं मांग सकता था।...

श्री शंकर दयाल सिंह : इसीलिए मैंने आपको एक्यूज नहीं किया है, भारत सरकार को कुछ नहीं कहा है।

श्री राजेश पायलट : ऐसे मौके पर मैं गया था कि जहाँ एक दुखभरी घटना हो गई थी। वहाँ एक तरफ इतनी मौतें हो गई थीं और दूसरी तरफ 57 हजार भाई वहाँ अपना इलाका छोड़कर एक जगह आए थे। स्टेट गवर्नमेंट उनके इंतजाम में लगी हुई थी। मैंने यह समझा कि मैं स्टेट गवर्नमेंट को यह जरूर कह दूँ कि यह तुम्हारी गलतियाँ रही हैं, इनको सुधारो। ऐसे मौके पर उस काम में बाधा डालना ठीक नहीं था क्योंकि 57 हजार आदिमियों को शाम का खाना न मिले या आगे कोई बात बन जाए तो वह भी एक गैर-जिम्मेदाराना बात होती, लेकिन मैंने वहीं पर कहा कि जिस किसी की गलती हो उनके खिलाफ आप एक्शन लें।

श्री शंकर दयाल सिंह : यही मैं जानना चाहता था कि यदि वह नहीं सुधरे तो क्या आप राष्ट्रपति शासन वहाँ लागू करेंगे और वहाँ की सरकार को डिसमिस करेंगे? आपको यह आश्वासन देना चाहिए। ... (व्यवधान) ... आपके खिलाफ या भारत सरकार के खिलाफ मैं नहीं कह रहा, लेकिन यह जानने का हमें हक है कि अगर भविष्य में इस तरह की घटनाएं होती हैं तो उस सरकार को क्या रहने का हक है? यह सदन को बताया जाए। ... (व्यवधान) ...

SHRI RAJESH PILOT: Sir, let me tell him one thing. In Manipur, it was the Congress Government which failed. We dismissed that Government. We imposed the President's Rule. It was the Congress Government. We imposed the President's Rule. It was the Congress Government. We do not hesitate to take action against that Government

which has failed. But this has to be decided by the Government whether they have reached that category or not. In Manipur, we dismissed our Government, we dismissed our Congress Government because we knew that the State Government had totally failed. So, please rest assured that the nation is more important. Political party is not important, State Government is not important, but the nation is more important. That is the attitude that we have.

**SHRI SHANKAR DAYAL SINGH:**  
Thank you. I am now satisfied.

**श्री केशव नारायण सारंग:** उप-सभाध्यक्ष महोदय, एक क्लेरिफिकेशन मुझे भी पूछना है। मैं बहुत देर से मंत्री महोदय का भाषण और उत्तर सुन रहा था। बड़ा अच्छा बोल रहे थे कि मैंने ऐसा किया, मैंने वैसा किया, इस सरकार ने ऐसा किया और यह सब हो रहा है। मुझे लगा कि यह केवल आई वाश के अलावा कुछ नहीं था और इस मौके पर उर्दू का एक शेर याद आ गया—

आप इस देश के गृह मंत्री हैं,

तू इधर उधर की न बात कर,  
यह बता कि कारवां क्यूँ लुटा।  
मुझे रहजनों से गरज नहीं,  
तेरी रहवरी का सवाल है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, इतने सारे लोग मर रहे हैं, पंजाब जल रहा है, कश्मीर जल रहा है और आप क्या कर रहे हैं? आपने कहा कि मैंने ऐसा किया, वहां कम्प्यूटर लगा दिये, वहां बायरलैस लगा दिया, वहां यह तैनात कर दिया और वह कह रहे हैं लोग मर रहे हैं, आपने क्या किया? किसको सजा दी? इसका कोई जबाब नहीं है। मुझे लगता है कि केवल आई वाश के अलावा कुछ नहीं किया। ... (अव्ययान)

**THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SATISH AGARWAL):** No reply is needed.

**श्रीमती सरला माहेश्वरी :** वाइस चैयरमेन साहब, माननीय मंत्री जी से मैं एक सवाल करना चाहूंगी। हालांकि उन्होंने अपने मंत्रालय से संबद्ध सभी पहलुओं पर विस्तार से रोशनी डाली और सुरक्षा संबंधी जो कल्पियां थीं उनको भी स्वीकार किया, लेकिन मंत्री महोदय इस बात को भी स्वीकारते हैं कि असम की समस्या के साथ उसके विकास का पहलू भी बहुत गहरे से जुड़ा हुआ है? मैं आपसे जानना चाहती हूँ कि क्या आप इस बात से अवगत हैं कि असम की सरकार किन भयावह आर्थिक कठिनाइयों से जूझ रही है? आज भी यह हो रहा है कि केन्द्रीय वार्षिक योजना से असम का जो हिस्सा होता है, उसमें से बहुत बड़ी राशि कर्ज के रूप में काट ली जाती है। मैं उदाहरण देना चाहूंगा कि पिछले वर्ष असम में बाढ़ नियंत्रण के लिए 25 करोड़ रुपया निर्धारित किया गया था, मगर उसमें असम को कितना मिला? सिर्फ 65 लाख रुपया मिला। आप इस तरह की स्थिति में क्या असम के विकास की कल्पना कर सकते हैं? किस तरह से वह सरकार, जिसके पास आर्थिक संसाधनों की इतनी कमी है, प्रदेश का विकास कर सकती है? मैं चाहूंगी कि आपकी कैबिनेट बैठकर इस पर विचार करे और असम, जो विकास में इतना पिछड़ा रह गया है, उसके लिए जरूर एक सर्वसम्मति से निर्णय ले।

**SHRI RAJESH PILOT:** Sir, it is a fact that this problem is there in all the seven States of the North-East. Last time, at the time of the Chief Ministers' Conference, we all had a meeting with the hon. Prime Minister. He assured us that he would do something. Sir, the system which is operating in the North-East is slightly difficult. The hon. Member is right. Some of the money which is allocated goes for overdraft. Even in the case of the Bodoland Autonomous Council, out of the Rs. 47 crores which is allocated to them in 1993-94 Rs. 14 crores goes for pay and allowances. If out of Rs. 47 crores, Rs. 14

[Shri Rajesh Pilot]

crores goes for pay and allowances, how can development be there?

Sir, the system is so faulty there. As I said, the hon. Prime Minister has assured us that he would call the Chief Ministers and he would discuss with them as to how we can solve this financial crisis. Naturally, development would take place only if resources are available. I do share the feeling of the hon. Member. I will convey this feeling, I will convey what the hon. Member has said, to the hon. Prime Minister once again.

**SHRI BHUBANESWAR KALITA:**

Sir, while giving his reply, the hon. Minister mentioned that in a meeting a number of Bodo militants had surrendered. Subsequently also, a number of Bodo militants had surrendered to the District Administration. In this connection, I would like to know what programmes are being implemented to rehabilitate these Bodo militants who have surrendered. I would like to know whether anybody has yet been rehabilitated. What programmes the Government has to rehabilitate they formed the Bodoland People's State?

**SHRI RAJESH PILOT:** Sir, as I mentioned, we are in the process of implementing the Bodo Accord. We were having regular meetings. Unfortunately, in the meantime, the group broke. Initially, they were the Bodoland Action Committee. Then, they formed the Bodoland People Party. They broke among themselves. The group got divided. Both the groups started demanding different things. It became difficult for us. At a personal level, I tried to bring them together because I felt that these tribals were sensitive about such things that they were very clear-hearted and straightforward. I wanted to bring them together as a team and move forward. While we were engaged in this pro-

cess, this thing had happened.

I assure the House, Sir, that our intention is to develop the area. Our intention is to bring our brothers and sisters in this far-flung area into the national mainstream. This would continue and we would certainly succeed in our efforts.

**THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SATISH AGARWAL):** The discussion on this Short Duration Discussion is over. We now take up the next item on the agenda, Shri Thangka Balu.

#### GOVERNMENT MOTION

**TWENTY-EIGHT AND TWENTYNINTH REPORTS OF THE FORMER COMMISSIONER FOR SCHEDULED CASTES AND SCHEDULED TRIBES AND THE FIFTH, SIXTH, SEVENTH AND EIGHT REPORTS OF THE NATIONAL COMMISSION FOR SCHEDULED CASTES AND SCHEDULED TRIBES**

**THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF WELFARE (SHRI K. V. THANGKA BALU):** Mr. Vice-Chairman, Sir, I beg to move the following Motion:

"That the Twenty-eighth and the Twenty-ninth Reports of the erstwhile Commissioner for Scheduled Castes and Scheduled Tribes for the years 1986-87 and 1987-89 laid on the Table of the Rajya Sabha on 9th May, 1989 and 31st August, 1990, respectively, and the Fifth, the Sixth, the Seventh and the Eighth Reports of the Commission (now National Commission) for Scheduled Castes and Scheduled Tribes for the years 1982-83, 1983-84, 1984-85 and 1985-86 laid on the Table of the Rajya Sabha on 7th March, 1986, 28th August, 1987, 6th May, 1988 and 18th November, 1988 respectively, be taken into consideration."